DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
निबन्ध साहित्य
Part -2
LIVE
16-07-2024 09:00 AM

बाबू गुलाब राय

बाबू गुलाब राय हास्य-व्यंग्य के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार रहे हैं। 'मेरी असफलताएँ, फिर निराश क्यों, तथा ठलुआ क्लब' आदि निबन्ध संग्रहों के माध्यम से उन्होंने व्यक्तिगत तथा तत्कालीन, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक विसंगतियों को व्यंग्य के विषय बनाकर कड़े प्रहार किए। वे समीक्षक, साहित्यकार, ढोंगी देशभक्त या समाज सुधारक, वकील, डॉक्टर आदि पर अपने, 'बेकार वकील, कम्पोजीटर स्त्रोत, चोरी कला के रूप में, विज्ञान युग का असफल नवयुवक, निराश कर्मचारी, आलसी भक्त, आफत का मारा दर्शनिक, मेरी मूर्खता की साकार मूर्ति, सत्ता सागर, मनुष्य की मुग्धता, पुनीत पापी, हमारा नेता कौन आदि निबन्धों के माध्यम से खूब बरसते हैं। बाबू गुलाबराय अपने निबन्धों में तत्कालीन ढोंगी तथा प्रदर्शन प्रिय समाज सुधारकों तथा देशभक्तों की पोल खोलते हैं, जो गगन चुम्बी इमारतों में रहकर गरीबी दूर करने के झूठे भाषण

देते घूमते रहते हैं। "बाबू गुलाबराय का व्यंग्य न प्रखर लगता है और न ही नुकीला। वे विसंगति पर संगत शब्दों में फब्तियों और चुटकियों द्वारा पाठक के मानस को सन्तुष्ट रखने तक ही सीमित नजर आते हैं। विषम से विषम परिस्थितियों में भी वे आलम्बन की खिल्ली नहीं उड़ाते। इसके विपरित वे अधिकतर जगह पर अपने आप को ही व्यंग्य का आलम्बन बनाते नजर आए हैं। उनकी करतूतों और असफलताओं पर वे दिल खोलकर हंसे हैं, साथ ही औरों को भी हँसाया हैं। उनके अधिकांश हास्य व्यंग्य परक निबन्धों के वे स्वयं कर्त्ता हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय विचारधारा की कविता के साथ चिंतनपरक निबन्धों का निर्माण किया। उनके 'साहित्य देवता', 'अमीर इरादे गरीब इरादे, समय के पाँव तथा चिंतक की लाचारी', निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुए हैं। अपने समय की धर्म एवं समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर किए गए अत्याचार, साहित्यिक एवं समीक्षकों की गुंडागर्दी आदि पर गम्भीर तथा तीखे व्यंग्य बाण चलाते नजर आते हैं।

बेढब बनारसी

वर्ष 1947 में प्रकाशित 'हुक्का यानी' निबन्ध संग्रह में स्थित 30 व्यंग्य निबन्धों में इन्होंने स्वातन्त्र्यपूर्ण तथा स्वातन्त्र्योत्तर भारत की सभी विसंगतियों पर बरसते हैं। बुरे फंसे मीटिंग में और नेताओं का स्कूल, में राजनेताओं की भाषणप्रियता तथा झूठे वादों की खिल्ली उड़ाई है। 'उधार का सौदा' 'बद अच्छा बदनाम बुरा, 'पंथ पेट, जबरदस्त का ठेंगा सिर पर' आदि निबन्धों में सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों पर कटाक्ष नजर आते हैं।

सियारामशरण गुप्त

गुप्त के 'झूठ सच' (1939) निबन्ध संग्रह में विषयों की विविधता के साथ व्यंग्य की वचन वक्रता नजर आती है। उनके 'मनुष्य की आयु दो सौ वर्ष,' 'साहित्य में क्लिष्टता', साहित्य और राजनीति, अन्य भाषा का मोह, कवि चर्चा, घोड़ा शाही, मुंशीजी तथा छुट्टी आदि निबन्धों में समाज, धर्म, राजनीति के साथ साहित्य एवं भाषा सम्बन्धी विसंगतियों पर प्रहार किया।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जीवन की बहुमुखी विषमताओं को व्यंग्य का आश्रय लेकर उभारती है। उनके अधिकतर निबन्ध वैयक्तिक और संस्मरणात्मक शैली में लिखे नजर आते हैं। उनके 'बदरीनाथ की यात्रा' 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध-विशेष उल्लेखनीय रहे हैं।

चतुरसेन शास्त्री

चतुरसेन शास्त्री के निबन्ध मुख्यत: गद्य काव्यात्मक हैं जिसमें 'अंतस्तल' 'जवाहर' तथा 'तरलाग्नि' आदि मुख्य निबन्ध हैं।

श्री राय कृष्णदास

श्री राय कृष्णदास के 'सागर और मेघ' 'सोना और लोहा' तथा 'हीरा और कोयला आदि संवादात्मक शैली में निबन्ध सर्वप्रसिद्ध हैं।

हरिभाऊ उपाध्याय

पण्डित हरिभाऊ उपाध्याय के व्यष्टि समष्टि, ग्रह कलह की आशंका तथा 'धर्म और नीति' 'बुदबुद', जीवन सिद्ध, अन्तज्योंति, अन्तर्बल, सदाचार आदि निबन्ध है।

पण्डित पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

पण्डित पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल के निबन्ध 'मकरंद' संग्रह में संकलित है।

डॉ० हरिशंकर शर्मा

डॉ० हरिशंकर शर्मा के द्वारा लिखित निबन्ध हैं, पिंजरा पोल, चिड़ियाघर, मिस पालसी की आत्मकहानी, देवियों का दबदबा, बेकार विद्यालय एवं सम्पादक जन्तु आदि।

ललित निबन्ध

हिन्दी के प्रमुख ललित निबन्धकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निबन्ध को व्यक्ति की स्वाधीन चिन्ता की उपज कहा है। अपने कल्पलता, अशोक के फूल' हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली खण्ड-9 तथा 'हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथवाली खण्ड-10 निबन्ध संग्रहों में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विषमताओं पर व्यंग्य नजर आता हैं। द्विवेदी अपने चिंतनशील स्वभाव के अनुकूल अपने समय के राजनेताओं की पदलिप्सा, दलबदलूपन, साहित्यकारों का शुष्क ज्ञान, समीक्षकों की दलबन्दी, पूर्वग्रह-दूषितता, सतही तथा शुष्क शिक्षा, नैतिक एवं चारित्रिक पतन, समझौतापरस्त प्रवृत्ति, विदेशी भाषा एवं साहित्य के प्रति अंधमोह, युगीन स्वार्थ प्रेरित उपयोगीतावादी मनोवृत्ति के परिणामस्वरूप पनपते निराशावाद, उदासीनता, असंतोष आदि पर धारदार व्यंग्य करते हैं। वे सच्चे व्यंग्यकार की भाँति एक ओर

सामाजिक विषमताओं पर करारा प्रहार करते हैं। वहीं दूसरी ओर आदर्श समाज की सम्भावनाओं को भी स्थापित करते हैं। यह सिद्ध होता है, कि द्विवेदी में व्यंग्य विनोद की शैली इतनी चुम्बकीय है कि अनायास पाठक के मन को जकड़ लेती है तथा अपने समय में व्याप्त विषमताओं से परिचित कराती है।

विद्यानिवास मिश्र

आधुनिक हिंन्दी निबन्ध के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पण्डित विद्यानिवास मिश्र अपनी व्यंग्य रचनाओं के कारण हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं। अपने निबन्धों में व्यक्ति एवं समाज जीवन की विसंगतियों को वे बड़ी मार्मिकता तथा यथार्थता से प्रस्तुत करते हैं। मिश्रजी के छः निबन्ध संग्रह प्रकाशित हैं। इनमें 'तुम चन्दन हम पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, कंटीले तारों के आर-पार, बसंत आ गया पर कोई । उत्कंठा नहीं, छितवन की छाँह, कदम की फूली डार आदि इसके अतिरिक्त निबन्ध हैं- मैने सिल पहुँचाई, कैटीले तारों के आर-पार, कौन तू फूलवा बीन निहारी, संचारिणी, गाँव का मन, नैरन्तर्य और | चुनौती, सोडहम, नदी नारी और संस्कृति, फागुन हुई ऐ दिना, बूँद मिले सागर में, पीपल के बहाने शिरीष की याद आई आदि।

शिवप्रसाद सिंह

प्रेमचन्द के बाद ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाले सफल कथाकारों में शिवप्रसाद सिंह अगली पंक्ति में आते हैं। अपने • उपन्यास, कहानी, एवं निबन्धों के माध्यम से भारतीय गाँवों के प्रतिनिधि के रूप में ग्रहण करके अत्यन्त यथार्थवादी एवं विचारोत्तेजक चित्रण प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं; शिखरों के सेतु, कस्तूरी मृग, चतुर्दिक, मानसी गंगा, किस-किस को नमन करूँ, क्या कहूँ कुछ कहा न जाय, खालिस मौज में आदि।

कुबेरनाथ राय

कुबेरनाथ राय हिन्दी ललित निबन्ध परम्परा के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर, सांस्कृतिक निबन्धकार उनके द्वारा लिखित निबन्ध है- प्रियानीलकण्ठी, रस आखेटक गंधमादन, विषाद योग, निषाद बाँसुरी, पर्ण मुकुट, महाकवि की तर्जनी, कामधेनु, पत्र मणिपुतुल के नाम, मन पवन की नौका, किरात नदी में चन्द्र मधु, दृष्टि अभिसार, त्रेता का वृहद मास, मराल, उत्तर कुरु, वाणी का क्षीर सागर, अन्धकार में अग्नि शिखा, आगम की नाव. आदि।

ग्रामीण चेतना के निबन्ध

-डॉ० रामदरश मिश्र

हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। ये जितने समर्थ कवि हैं उतने ही समर्थ उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार हैं। उनकी लम्बी साहित्य-यात्रा समय के कई मोड़ों से गुजरी है और नित्य नूतनता की छवि को प्राप्त होती गई है। उनकी सृजनात्मक प्रतिभा ने अपनी - प्रभावशाली अभिव्यक्ति के साथ-साथ गजल में भी उन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की हैं। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- कितने बजे हैं, बबूल और कैक्टस, घर परिवेश, छोटे-छोटे सुख आदि।

विवेकी राय

विवेकी राय हिन्दी और भोजपुरी भाषा के प्रसिद्ध सहित्यकार थे। - उन्होनें 85 से अधिक पुस्तकों की रचना की। वे ललित निबन्धकार के रूप में समभ्यस्त हैं। उनकी रचनाएँ गंवई मन और मिज़ाज से सम्पृक्त हैं। विवेकी राय की रचना कर्म नगरीय जीवन के ताप से तपाई हुई मनोभूमि पर ग्रामीण जीवन के प्रति सहज राग की रस वर्षा के समान है, जिसमें भीग कर उनके द्वारा रचा गया परिवेश गंवाई गंध की सोन्हाई में डूब जाता है 'उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- किसानों का देश, गाँवों की दुनिया, त्रिधारा, फिर बैतलवा डाल पर, आस्था और चिन्तने, गँवई गंध गुलाब, नया गाँव नाम, आम रास्ता नहीं है, जगत तपोवन सो कियो, जीवन का गणित है आदि।

रामधारी सिंह दिनकर

दिनकर की 29 गद्य पुस्तकें हैं। इनमें से अधिकांश निबन्ध की हैं। तथा दिनकर जी ने हिन्दी जगत में एक विचारात्मक एवं भावात्मक निबन्धों का सृजन किया और अपने मौलिक विचारों को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करते हुए, प्रेम-घृणा, उत्साह तथा धार्मिक एवं राजनैतिक विषयों को आधार बनाया। इनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, रेती के फूल, हमारी सांस्कृतिक एकता, वेणुवन, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता आदि।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

अज्ञेय

प्रयोगवाद और नई कविता के विशिष्ट कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का स्वर अत्यन्त वैविध्य पूर्ण है, एक कुशल कवि होने के साथ वे एक सफल कहानीकार, उपन्यासकार, निबन्धकार भी हैं। इन्होंने अपने निबन्धों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया है कि अज्ञेय ने अपने साहित्य द्वारा जन मानस के समक्ष संस्कृति का वह रूप प्रस्तुत किया है, जो मानव विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी है। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं। त्रिशंकु, सबरंग और कुछ राग, आत्मनेपद, आलवाल, लिखी कागद कोरे, अद्यतन आदि।

डॉ० रामविलास शर्मा

आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक, विचारक अंग्रेजी के प्रोफेसर, हिन्दी के प्रकाण्ड पण्डित और महान विचारक, ऋग्वेद और मार्क्स के अध्येता, कवि, आलोचक, इतिहासवेत्ता, भाषाविद, राजनीति-विशारद, एवं निबन्धकार के रूप में प्रसिद्ध है। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- प्रगति और परम्परा, साहित्य और संस्कृति, भाषा, साहित्य और संस्कृति, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ, लोक जीवन और साहित्य, स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, आस्था और सौन्दर्य, साहित्य स्थायी मूल्य और मूल्यांकन, भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा, परम्परा का मूल्यांकन, भाषा युग बोध और कविता, कथा विवेचन और गद्य शिल्प, विराम चिन्ह आदि।

व्यंग्यात्मक निबन्ध

हिन्दी के महत्त्वपूर्ण व्यंग्य निबन्धकार निम्नलिखित हैं-

हरिशंकर परसाई

हिन्दी व्यंग्य साहित्य को नई पहचान तथा विधा का दर्जा दिलाने में 'हरिशंकर परसाई' शीर्षस्थ रहे हैं। मार्क्सवादी विचार धारा से प्रभावित परसाई जी विसंगतियों पर केवल प्रहार नहीं करते बल्कि इन विसंगतियों के मूल कारणों की छानबीन कर समाज के सामने रखते हैं। वे समाज में इनके प्रति लड़ने की प्रेरणा निर्माण करते हैं। अपनी इसी विशेषता के कारण परसाई को 'आधुनिक कबीर' कहा गया है।

तत्कालीन समय की राजनीति, समाज, धर्म, साहित्य, शिक्षा, प्रशासन, पुलिस, न्याय, चिकित्सा, रेल आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों की अभिव्यक्ति हेतु निबन्ध, उपन्यास, कहानी लेख तथा अखबारी स्तम्भ को अपनाया। लेकिन उनकी ख्याति रहीं

निबन्धकार के रूप में उनके व्यंग्य निबन्ध निम्नांकित हैं- भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, पगडंडियों का जमाना, निठल्ले की डायरी, और अंत में, शिकयत मुझे भी है, ठिठुरता हुआ गणतन्त्र, अपनी-अपनी बीमारी, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर, सुनो भाई साधों, तुलसीदास चंदन घिसे, कहत कबीर, हँसते हैं रोते हैं, तब की बात और भी, ऐसा भी सोचा जाता है, पाखण्ड का अध्यात्म, आवारा भीड़ के खतरें, प्रेमचन्द फटे जूते आदि।

श्री लाल शुक्ल

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित 'श्रीलाल शुक्ल' जी अपने लेखन की शुरुआत व्यंग्य से करते हैं। स्वयं सरकारी कार्यालय में नौकरी करने के बावजूद उनके अधिकतर व्यंग्य राजनीति तथा प्रशासन की अव्यवस्था पर ही प्रहार करते हैं। अपने समय की विसंगतियों पर प्रहार करने हेतु वे भड़ैती, उपहार, तीक्ष्ण वैदग्ध को अपनाते हैं। शुक्ल जी के महत्त्वपूर्ण व्यंग्य संकलन निम्नांकित हैं- अंगद का पाँव, यहाँ से वहाँ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, यह घर मेरा नहीं, कुछ जमीन पर कुछ हवा में।

शरद जोशी

शरद जोशी व्यंग्य को स्वतन्त्र विधा का दर्जा देने में हरिशंकर परसाई के साथ इनका नाम जुड़ा हुआ है। उनके व्यंग्य निबन्ध तत्कालीन समाज के हर पहलु को अपना कथ्य बनाते हैं। उनके द्वारा लिखित निबन्ध हैं- परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, रहा किनारे बैठ, तिलस्म, दूसरी सतह, पिछले दिनों, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे आदि।